REVIEW OF RESEARCH

# ''रीवा जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास''

ज्योति कुमरे

शोधार्थी, वाणिज्य शासकीय शहीद केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज, जिला रीवा (म.प्र.)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

**सारांशः–**

आर्थिक विकास में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उद्योगों में विशेषकर लघु एवं कुटीर उद्योगों का विशिष्ट स्थान होता है, क्योंकि यह कम पूंजी, कम साधन एवं बिना प्रशिक्षण के परम्परागत रूप से संचालित किये जाते हैं। यद्यपि लघु एवं कुटीर उद्योगों में अनेक समस्याएं भी हैं। जैसे– कच्ची सामग्री की समस्या, मिट्टी की समस्या, पूंजी की कमी, उत्पादन की धीमी गति, बाजार का अभाव, सरकारी उदासीनता एवं नवाचार का अभाव आदि।

लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास के लिये उत्पादित वस्तुओं को नवीन डिजाइनों में तैयार करना चाहिए। इन उद्योगों को पर्याप्त वित्त एवं मशीनों यंत्रों को उपलब्ध कराना चाहिए, आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण दिलाया जाना चाहिए, आवश्यक कच्चा माल की उपलब्धता, उद्यमियों को विभिन्न चित्रों, माध्यमों तकनीकों आदि जानकारी के समुचित प्रचार–प्रसार होना, अनुदान के लिये सरल एवं स्पष्ट नियम होना चाहिए ताकि उद्यमियों को से अनुदान प्राप्त हो सके।

लघु एवं कुटीर उद्योगों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामीणजनों के जीवनोपार्जन के लिये कृषि के बाद दूसरा बड़ा क्षेत्र है। भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योग की वस्तुएं घरेलू उपभोग के साथ–साथ विदेशों को भी निर्यात की जाती है। अतः इन उद्योगों का महत्व औद्योगिकीकरण एवं निर्यातोन्मुख वस्तुओं को बनाने के लिये महत्वपूर्ण है।

**मुख्य शब्दः**–आर्थिक विकास, लघु एवं कुटीर उद्योगों, रीवा जिला।

**प्रस्तावना :**

आर्थिक विकास में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विशेषकर लघु एवं कुटीर उद्योगों का विशिष्ट स्थान होता है क्योंकि यह कम पूंजी, कम साधन एवं बिना प्रशिक्षण के परम्परागत रूप से संचालित किये जाते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के पश्चात् लघु एवं कुटीर उद्योगों का स्थान आता है। ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश भाग इन्हीं उद्योगों का संचालित करता है।

प्रत्येक व्यक्ति के मन में उद्यमी बनने, सम्पत्ति कमाने तथा आत्मनिर्भर बनने की इच्छा होती है। मूलतः उद्यमी होने के लिये पांच कसौटियां हैं। उद्यमी बनने का निर्णय करने पर इन कसौटियों को पार करने के लिये उचित 'अभ्यास' करना आवश्यक है। सम्पत्ति अर्जित करने के लिये लगन, रूचि, स्वाभाव और आचार में लचीलापन, व्यवसाय प्रक्रिया के रहस्य की जानकारी, उद्योग की श्रृंखला, परस्पर संबंध निर्माण करने की तैयारी तथा बिना थके, बिना निराश हुये कोशिश करते रहने की मानसिक–शारीरिक–सांस्कृतिक तैयारी।

भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था के विकास में लघु एवं कुटीर उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लघु एवं कुटीर उद्योग स्थानीय संसाधनों का उचित/इष्टतम उपयोग द्वारा स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के अवसर प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये शासन द्वारा स्वरोजगार परियोजनायें संचालित की जा रही है। इन परियोजनाओं के माध्यम से उद्यमियों को आर्थिक सहायता आवश्यक

LBP PUBLICATION

कच्चा माल एवं मशीनरी उपलब्ध कराया जाता है एवं उसके उत्पाद को क्रय करके विपणन का कार्य किया जाता है ताकि उद्यमियों को किसी प्रकार की हानि न उठानी पड़े।

मध्यप्रदेश का रीवा जिला आर्थिक विकास के क्षेत्र में गति कर रहा है। मध्यम और बड़े उद्योगों के साथ–साथ लघु एवं कुटीर उद्योग का भी विकास हो रहा है। इस जिले में भी सरकार द्वारा स्वरोजगार परियोजनाएं बड़े पैमाने पर संचालित की जा रही है, जिससे ग्रमीण क्षेत्र की बहुत बड़ी जनसंख्या स्वरोजगार क्षेत्र में सम्मिलित है।

## शोध–प्रविधि :

प्रस्तुत शोधकार्य के लिये प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया। प्राथमिक समंक विभिन्न उद्यमियों के साक्षात्कार व्यक्तिगत साक्षात्कार व संस्थाओं द्वारा प्राप्त किया गया तथा द्वितीयक समंक लघु एवं कुटीर उद्योग से संबंधित साहित्य, शोध–पत्रिकाएँ, सरकारी एवं गैर सरकारी प्रकाशनों, प्रतिवेदनों, गजट, अधिसूचनायें, धार्मिक ग्रंथों, जर्नलों एवं संचार माध्यमों से प्राप्त किये गये हैं। तदान्तर समंकों का वर्गीकरण कर, सारणीयन एवं विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकाला गया।

## परिकल्पना :

- रीवा जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास में उदारीकरण एवं निजीकरण के अन्तर्गत औद्योगिकीकरण की गति निरन्तर तीव्र होती जा रही है।
- रीवा सुपाड़ी के खिलौने के लिये प्रसिद्ध है, अतः यहाँ लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास की संभावनाएँ अधिक है।
- यहाँ पर वनोपज पर आधारित उद्योगों की संभावना है। अतः कत्था उद्योग प्रसिद्ध है।
- चूने के पत्थर, बाक्साइट एवं शीशे की बालू जैसे बहुमूल्य खनिज पाये जा रहे हैं, जिससे यहाँ पर सीमेन्ट उद्योग स्थापित हुये हैं। अतः भारी उद्योग के पूरक एवं सहयोगी के रूप में लघु उद्योग की बहुलता आवश्यक है।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों के लिये पर्याप्त पूंजी, कच्चे माल की कमी एवं आय का कम निर्माण आदि समस्याएं होती है।
- स्थानीय संसाधन, स्थानीय तकनीक, शिल्प के सक्षम उपयोग करने की आवश्यकता को ध्यान मे रखकर लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना होनी चाहिए।
- बहु–उत्पादन से विपणी तंत्र का विकास भी आवश्यक होगा। अतः लघु उद्योगों की निर्यात की भूमिका उज्वल है।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन करने वाली संस्थाओं का अभाव है।

## उद्देश्य :

- रीवा जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास का अध्ययन करना।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों का मुख्य उद्देश्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि करते हुये बेरोजगारी एवं अर्धबेरोजगारी की समस्या का समाधान करना।
- आर्थिक शक्ति का समान वितरण करना है। लघु एवं कुटीर उद्योगों से आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण होता हे।
- आम जनता को श्रेष्ठ वस्तुएँ उपलब्ध कराना लघु एवं कुटीर उद्योगों का मुख्य उद्देश्य है।
- श्रम प्रधान तकनीक के कारण श्रमिकों की आवश्यकता अधिक रहती है। अतः आवश्यक है कि वे औद्योगिक शांति की स्थापना करना।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों के आधार पर जिले की सभ्यता एवं संस्कृति सुरक्षित रहती है।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों का मुख्य उद्देश्य है कि वे प्राकृतिक साधनों का अनुकूलतम उपयोग करें।
- लघु एवं कुटीर उद्योग में लगे श्रमिकों का आर्थिक अध्ययन करना।

- लघु एवं कुटीर उद्योगों को रोजगारोन्मुखी बनाना।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों की समस्याओं का अध्ययन करना।
- समस्याओं का निराकरण हेतु सुझाव देना।

## विषय–विश्लेषण :

रीवा जिला गांवों का जिला है। यहां पर कृषि के बाद ग्रामीणों के जीवनोंपार्जन का साधन लघु एवं कुटीर उद्योग हैं। इन उद्योगों में परिवार के प्रत्येक व्यक्ति कार्य में लगे रहते हैं। लघु उद्योगों के लिये कम पूंजी, सीमित स्थान, कम कच्चा माल, कम उत्पादित वस्तुएं, उत्पादन में हॉथ का अधिकाधिक प्रयोग, छोटा विपणन क्षेत्र एवं नवाचार आदि की कमी आदि विशेषताएं होती है। इन उद्योगों का प्रशिक्षण परम्परागत ढंग से प्राप्त होता है, कोई भी संस्था प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था नहीं करती है। इन उद्योगों से निर्मित वस्तुएं प्रायः हमारे दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली होती है। इनके निर्माण न होने से जीवन निर्वाह में कठिनाई हो सकती है।

### सारणी क्रमांक–1
### रीवा जिले में संचालित लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थिति

| क्रमांक | उद्योग का नाम | प्रयुक्त कच्चा माल |
|---|---|---|
| 1. | बांस की टोकरी उद्योग | बांस पर आधारित |
| 2. | मिट्टी के बर्तन उद्योग | मिट्टी (दुमुट) का प्रयोग |
| 3. | ईंटा (भट्ठा) उद्योग | मिट्टी पर आधारित |
| 4. | बीड़ी उद्योग | तेंदू पत्ता पर आधारित |
| 5. | बढ़ईगीरी | लकड़ी पर आधारित |
| 6. | लोहारगीरी | लौह तत्व पर आधारित |
| 7. | सुनारी | सोना, चांदी इत्यादि |
| 8. | बरी एवं पापड़ उद्योग | बेसन एवं दाल |
| 9. | दाल मिल | दाल पर आधारित |
| 10. | चावल मिल | धान पर आधारित |
| 11. | डेयरी उद्योग | दूध पर आधारित |
| 12. | ब्रेड, बिस्कुट, सेवाइयां, नमकीन निर्माण | मैदा, बेसन, आटा पर आधारित |
| 13. | चर्म उद्योग | चमड़े पर आधारित |
| 14. | मांस व अण्डा उद्योग | मुर्गी, बकरे पर आधारित |

स्रोत : प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के आधार पर।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले में लगभग 40 उद्योग संचालित है। ये लघु उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार पर ये लोगों के जीविका दिलाने में उपयोगी है।

औद्योगिकीकरण के कारण इन उद्योगों में भी थोड़ा–बहुत मशीनीकरण का उपयोग होने लगा है तथा निर्मित वस्तुओं में निखाार आने लगा जिस कारण इन उद्योगों के प्रति समाज का आकर्षण कम नहीं हुआ है। यद्यपि वैज्ञानिक प्रगति के कारण कुछ वस्तुएं कारखानों में बनने लगी है, जो आकर्षक एवं गुणवत्ता में श्रेष्ठ होती है, जिन्हें लोग अधिक प्रयोग करने लगे हैं जैसे– जूट की रस्सी, बोरी की जगह पर प्लास्टिक की रस्सियां एवं बोरियां आदि। लकड़ी के जगह पर प्लास्टिक के समान आदि।

## समस्यायें :

- **कच्ची सामग्री की समस्या** :लघु एवं कुटीर उद्योगों में प्रयुक्त होने वाली कच्ची सामग्री या तो दुर्लभ या तो मंहगी हो गई हैं। जैसे–बेंतबांस की उपलब्धता सार्वजनिक न होकर सरकार उपलब्ध कराती है, जो मंहगी एवं समय पर उपलब्ध नहीं होती।

- **मिट्टी** के बर्तन के लिये कोई अपने खेत की मिट्टी नहीं देना चाहता है।
- **पूंजी की कमी** : लघु एवं कुटीर उद्यमियों को व्यापार संचालन के लिये उपयुक्त पूंजी नहीं मिलती है। बैंक की कार्यप्रणाली विलम्बकारी होती है एवं साहूकार से उधार ली गई पूंजी की ब्याज दर ऊंची एवं शर्ते कठोर होती है।
- **उत्पाद की धीमी गति** : इस प्रकार के उद्योग में निर्माण प्रक्रिया धीमी गति से होता है, जिससे कारीगर काफी समय बाद बिक्री कर आय अर्जित करता है जो प्रतिदिन की आय न्यूनतम होती है।
- **बाजार का अभाव** : लघु एवं कुटीर उद्योगों से निर्मित माल विक्रय हेतु निश्चित बाजार की व्यवस्था नहीं होती है। अतः ये घूम–घूम कर तथा किसी असुरक्षित जगह पर बैठकर अपना माल बेंचते हैं।
- **सरकारी उदासीनता** : सरकार द्वारा अपनी नीतियों में इन उद्योगों को बढ़ावा देने की घोषणाएं तो करते हैं किन्तु भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही उन्हें सफल नहीं होने देती।
- **नवाचार का अभाव** : लघु एवं कुटीर उद्योगों की वस्तुओं में कारीगर कोई नयापन लाने का प्रयास नहीं करता है, जिससे वस्तुओं के प्रति आकर्षण नहीं रहता है।

## सुझाव :

- लघु एवं कुटीर उद्योग में उत्पादित वस्तुओं को नवीन डिजाइनों में तैयार किया जाना चाहिये, जिससे उत्पादित वस्तुओं की मांग में अपेक्षाकृत वृद्धि हो सके।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों को पर्याप्त वित्त एवं आवश्यक मशीनों, यंत्रों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- लघु एवं कुटीर उद्यमियों को आवश्यकतानुसार समय–समय पर प्रशिक्षण दिलाया जाना चाहिए ताकि अधिक कार्यदक्ष हो सकें।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों के लिये आवश्यक कच्चा माल उचित कीमत पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- ऋण सुविधाएं आसान किश्तों एवं कम ब्याज दर पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों की तमाम योजनाओं का प्रचार–प्रसार ऐसा हो कि उद्यमी विभिन्न चित्रों, माध्यमों, तकनीकों आदि जानकारी से अवगत हो सके।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों को मिलने वाला अनुदान स्वीकृत होने में सरल स्पष्ट नियम होना चाहिए ताकि उद्यमी आसानी से अनुदान को प्राप्त कर उद्योग का संचालन कर विकास कर सके।

## निष्कर्ष :

लघु एवं कुटीर उद्योगों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामीणजनों के जीवनोपार्जन के लिये कृषि के बाद दूसरा बड़ा क्षेत्र है। सीमित साधनों के बावजूद इस उद्योग की उत्पादित वस्तुए हमारे जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं में शामिल है। लघु एवं कुटीर उद्योगों की यद्यपि अनेक समस्यायें हैं फिर भी इन उद्योगों का विकास किया जा सकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कुछ लघु एवं कुटीर उद्योग की वस्तुएं घरेलू उपभोग के साथ–साथ विदेशों को भी निर्यात की जाती है, जिससे बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। अतः इन उद्योगों का महत्व औद्योगिकीकरण एवं निर्यातोन्मुख वस्तुओं को बनाने के लिये महत्वपूर्ण है।

## संदर्भ ग्रन्थ :–


1. लघु एवं कुटीर उद्योग (स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज) – एन.पी.सी.एस. (क्रियेटिव) Creative Publication, 106-E कमला नगर, दिल्ली।
2. लेटेस्ट प्राफीटेबल होम कॉटेज एण्ड स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज –विकास अग्रवाल, हंस कान्सलटेन्सी ब्यूरो नई सड़क, दिल्ली।
3. समाचार पत्र एवं दूरदर्शन।
4. इन्टरनेट।
5. व्यावसायिक वातावरण एवं उद्यमिता– गुप्ता एवं चतुर्वेदी, महावीर प्रकाशन, दिल्ली, 2013

6. रीवा जिले का वर्तमान औद्योगिक परिदृश्य एवं वर्ष 2020 की परिकल्पना, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, रीवा (म.प्र.)।
7. उद्यमिता विकास –प्रो. त्रिभुवन शुक्ल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2015

ज्योति कुमरे
शोधार्थी, वाणिज्य शासकीय शहीद केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज, जिला रीवा (म.प्र.)

LBP PUBLICATION